International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-1 February- 2015
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

शिक्षक प्रशिक्षण की सृजनात्मकता, दुश्चिंता, अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। (मेरठ जिले के विशेष सन्दर्भ में)

डा0 इन्दु सिंह
शोध निर्देशिका
प्राचार्या
पंजवटी इस्टीट्यूट आफ एजूकेशन टैक्नोलॉजी
मेरठ

अजय सक्सेना
शोधार्थी
एम0ए0,एम0एड
पंजवटी इस्टीट्यूट आफ एजूकेशन टैक्नोलॉजी
मेरठ

प्रस्तावना–

भारत अपनी संस्कृति एवं शिक्षा के लिए सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध रहा है। इसका एकमात्र आधार शिक्षा ही रहा है। शिक्षा रूपी प्रकाश की ज्योति को फैलाने वाला शिक्षक ही मुख्य रूप से है। वैदिक काल में शिक्षक अर्थात् 'गुरु' अति विद्वान, स्वाध्यायी, धर्मपरायण तथा अतिसंचयी भी होते थे। उस समय उन्हें समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। वे देव रूप में प्रतिष्ठित थे। इन्हें धियावसु (जिसकी बुद्धि ही धन है) सत्यजन्मा (सत्य को जाननेवाला) और विश्ववेत्ता (सर्वज्ञ) आदि विशेषणों से सम्बोधित किया जाता था। ये अपने गुरुकुलों के पूर्ण स्वामी होते थे, पर पूर्ण स्वामित्व के साथ उत्तरदायित्व जुड़ा था। ये अपने गुरुकुलों की सम्पूर्ण व्यवस्था के लिए उत्तरदायी होते थे। आवास, भोजन, स्वास्थ्य आदि सभी सुविधाओं के साथ–साथ उचित दीक्षा की व्यवस्था भी करते थे।

''विद्यालय एक उद्यान है तथा शिक्षक एक सर्तक माली के समान है जिस प्रकार पौधों के विकास के लिए आवश्यकतानुसार उसे कडी धूप व सिंचाई आदि की सुव्यवस्था उचित ढंग से सुनियोजित करता है उसी प्रकार एक शिक्षक अपने छात्रों के चहुँमुखी एवं सर्वांगीण विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है।''

जनार्दन रेड्डी समिति (1992) में शिक्षक के सन्दर्भ में कहा है कि शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार हेतु प्रत्येक जिलों में डाइट स्थापित किये जाने की बात की। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की शिक्षक शिक्षा (ब्ज्म्), उच्च अध्ययन केन्द्र (ब्।ैम्) सभी सुझाव दिया। सबसे बड़ा सुझाव छब्ज्म् की स्थापना का रहा जो शिक्षक प्रशिक्षण का बहुत सर्वोच्च संस्था होता है।

भारतीय शिक्षा के इतिहास के विषय में समय–समय पर सभी ने अपना मत व्यक्त किया– प्रसिद्ध यूरोपीय शिक्षाशास्त्री व दार्शनिक जान लाक महोदय ने भी अनेक गुण शिक्षक के बारें में बताया।

- शिक्षक का सबसे बड़ा कार्य मस्तिष्क का निर्माण करना है।
- शिक्षक छात्रों के उदत्त मूल्यों के अनुकरण करना सीखायें।
- शिक्षक का सबसे पवित्र कर्तव्य है कि यह छात्रों को उचित कर्तव्य करने, अर्थात उच्च कार्यों हेतु प्रेरित करें। इतना ही नही लाक महोदय की यह बात बहुत ही महत्वपूर्ण है–

''सम्मान और अवहेलना मन के सर्वाधिक शक्तिशाली प्रलोभन है अतः शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों को सही रास्ते पर लाने के लिए उनका तिरस्कार करें अथवा सम्मान करें।'' सर्वथा उपयुक्त है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर आपसी अन्तर्सम्बन्धों के माध्यम से नित नई वस्तुओं को देखकर सदैव वह अपने व्यवहार में सदैव परिवर्तन करके वह अपनी सृजनात्मक शक्तियों का विकास करता है। मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन की मुख्य भूमिका शिक्षा के द्वारा होता है। शिक्षा के द्वारा ही सृजनात्मक शक्तियों का विकास होता है। प्रत्येक मनुष्य में सृजनात्मक क्षमता भिन्न–भिन्न होती है लेकिन शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति में व्याप्त जन्मजात भिन्नताओं को अधिक रूप में कम करता है। वर्तमान युग में सृजनात्मक या सृजनात्मकता किसी भी मनुष्य या समाज का इतना महत्वपूर्ण कारक बन गया है जो किसी भी समाज, देश के विकास में पर्याय बन चुकी है।

सृजनात्मकता शब्द अंग्रेजी के **'क्रियेटिवटी'** (ब्तमंजपअपजल) से बना है। इस शब्द के समानान्तर विधायिका, उत्पादन रचनात्मकता, डिस्कवरी आदि का प्रयोग होता है। फादर कामिल बुल्के ने 'क्रियेटिक' शब्द के समानान्तर सृजनात्मक, रचनात्मक सर्जक शब्द बताये है। डा0 रघुवीर ने इसका अर्थ सर्जन, उत्पन्न करना, सर्जित करना, बनाना बताया है।

सृजन वह अवधारणा है जिसमें उपलब्ध साधनों से नवीन या अनजानी वस्तु, विचार या धारणा को जन्म दिया जाता है। सृजनात्मक से अभिप्राय है रचना सम्बन्धी योग्यता, नवीन उत्पाद की रचना। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सृजनात्मक स्थिति में अन्वेषणात्मक होती है।

डा0 रूश के अनुसार –

''सृजनात्मकता मौलिकता वास्तव में किसी भी प्रकार की क्रिया में घटित होती है।''
क्रो एवं क्रो के अनुसार – ''सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।''
जेम्स डेवर का कथन है , ''सृजनात्मकता मुख्यतया नवीन रचना या उत्पादन में होती है।''

दुश्चिंता या अवसाद विविध प्रकार की मानसिक बीमारियों का प्रमुख कारण है। इसका प्रभाव मानवीय रिश्तों से क्षरण/गिरावट और व्यक्ति के व्यवहार में आश्चर्य जनक परिवर्तन के रूप में महसूस किया जा सकता है। वास्तव में हम यह कह सकते है कि दुश्चिंता भी मानव व्यवहार के अध्ययन में एक प्रमुख एवं स्वंतत्र चर के रूप में रखा जा सकता है। प्रायोगिक मनोविज्ञान में अनेक मानवीय व्यवहारों को दर्शाने वाले लोगों के उच्च, मध्य एवं निम्न स्तर की दुश्चिंता/अवसाद ग्रस्तता को दर्शाने वाले व्यक्तियों के लिए बहुत से अनुसंधानात्मक कार्य किये जा चुके है।
एक बालक अपने व्यक्तित्व के विकास एवं अपने पर्यावरण में सामंजस्य स्थापित करने के लिए शैक्षणिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में क्रिया–प्रतिक्रिया करता है। शैक्षणिक क्षेत्र में विकास करने के लिए बालक शिक्षा ग्रहण करता है। शिक्षा ग्रहण करते समय बालक बहुत सी शैक्षणिक समस्याओं से परिचित होता है जिससे वह अन्ततः तनाव में आता है और दुश्चिंता/अवसाद ग्रस्तता का शिकार हो जाता है।
शिक्षक–प्रशिक्षण के छात्रों के समक्ष शैक्षणिक समस्यों के साथ–साथ सामाजिक आर्थिक आदि तरह की समस्याऐं होती है जिससे शिक्षण कार्य के दौरान अच्छे रोजगार की तलाश, भावी जीवन साथी का चुनाव, समाज में अपनी प्रतिष्ठा, छात्रों, साथियों एवं अभिभावकों से सम्मान आदि तरह की भावना होती है।
व्यक्ति के व्यक्तित्व को सबसे अधिक दुश्चिंता या चिन्ता प्रभावित करती है। दुश्चिंता से व्यक्ति को अनेक प्रकार की शारीरिक बीमारियाँ–यथा– मांसपेशियों में कमजोरी तनाव, थकान, सीने में दर्द, रक्तचाप आदि तरह की समस्याऐं पैदा हो जाती है। जिसकी प्रभाव व्यक्ति के शारीरिक और व्यक्तित्व पर परिलक्षित/दिखाई देता है।
दुश्चिंता एक प्रक्रिया में रूकावट समझी जाती है। एक व्यक्ति जो दुश्चिंता से पीड़ित होता है वह व्यक्ति किसी भी कार्य को करने में अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग नही कर सकता है। दुश्चिंता क्रिया में रूकावट डालती है जिससे सीखने की गति में कमी आ जाती है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र विज्ञान, कला, साहित्य, संगीत एवं राजनीति में सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है। किसी भी देश का बहुमुखी विकास सृजनशील व्यक्तियों पर ही आधारित होता है।
सृजनात्मकता व्यक्तित्व और बुद्धि की अपेक्षा कम अन्वेषित है। भारत में विदेशों की अपेक्षा इस क्षेत्र में कम शोध कार्य हुए है। प्राचीनकाल में इसका क्षेत्र साहित्य, संगीत, गणित आदि कुछ ही विषयों तक सीमित था परन्तु अब धीरे–धीरे इसका क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है।

वर्तमान समय के प्रतियोगितापूर्ण समय में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र सृजनात्मक मस्तिष्क की आवश्यकता है। अतः प्रत्येक देश का यह कर्त्तव्य है कि वह सृजनात्मकता को प्रश्रय देने का समुचित प्रबन्ध करें ताकि यही बालक और युवा छात्र भविष्य में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समाज को निर्देशित करने में राष्ट्र की सफलता एवं प्रगति के पथ पर ले जाने में सहायक होते है।
सृजनात्मकता के महत्व की पुष्टि करते हुए मासलो (1945) का कथन है कि आत्मानुभूति व्यक्ति की आधारभूत आवश्यकता है यह सृजनात्मकत व्यक्ति में ही पाई जाती है। आज प्रत्येक देश में वैज्ञानिक विधियों की खोज तथा तकनीकी उपलब्धियों के लिए सृजनात्मक व्यक्तियों को ढूँढना एक आवश्यक कार्य है।
इतिहास गवाह है कि किसी देश के युवा उस देश के वर्तमान एवं भविष्य दोनों का निर्माण करते है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा का प्रसार बड़ी तेजी से हो रहा है। जगह–जगह पर विश्वविद्यालय, महाविद्यालय बरसाती मेढ़क की तरह खुल गये है जो कि गुणवत्तापरक रोजगार परक शिक्षा देने का वादा करते है। वहीं विश्व बैंक जैसी संस्था ने यह कहकर ढोल का पोल खोलने का कार्य किया है कि ''भारत के 90 प्रतिशत स्नातक नौकरी के लायक ही नही है।''

विद्यार्थी शिक्षक–प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद भी रोजगार की तलाश में इधर–उधर भटकते रहते है, जिनके ऊपर पास–पड़ोस, रिश्तेदार, दोस्तों एवं माता–पिता तथा समाज का दबाव बराबर बना रहता है। अनिश्चित भविष्य को लेकर छात्र तनाव/चिन्ता/दुश्चिंता का शिकार हो जाते है जो उनके व्यक्तित्व को बुरी तरह प्रभावित करता है।
प्रस्तुत लघुशोध में शोधकर्ता द्वारा शिक्षक–प्रशिक्षण की सृजनात्मकता, दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जायेगा और कोशिश की जायेगी कि ऐसे क्या कारण है कि इस स्तर के छात्रों को दुश्चिंता प्रभावित करती है जो उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। सृजनात्मकता एवं दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना शोधकर्ता का उद्देश्य एवं आवश्यकता है।

जैसे–जैसे अध्ययनरत शिक्षक–प्रशिक्षण बढ़ोत्तरी करने लगता है उसका सभी प्रकार की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास भी प्रारम्भ हो जाता है। इस प्रकार शिक्षक–प्रशिक्षण अपना सर्वोन्मुख विकास करता हुआ अपने शब्दों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम बनता है। शनैः शैनः शिक्षक अपनी शारीरिक परिपक्वता के साथ अपने सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक क्षेत्र में विकास के लिये परिश्रम करता है। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को परिश्रम के साथ करता है परन्तु उसकी महत्वाकांक्षा और इच्छाएं पूरी नहीं होती तो एक प्रकार का मानसिक दबाव उत्पन्न होता है। जब व्यक्ति अपने कार्य तथा कार्य के परिणाम से असंतुष्ट हो जाता है तो वह अपनी असफलता के कारण कई प्रकार के तनाव लेने लगता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व को जन्म देता है या इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि असंतुष्टि व्यक्तित्व को जन्म देने में प्रमुख से उत्तरदायी होती है।
व्यक्तित्व कई प्रकार की मानसिक अच्छाई व बुराईयों का कारण हैं यह मानव सम्बन्धों और उनके व्यवहार को भी प्रभावित करती है, बल्कि यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्ति एक महत्वपूर्ण और स्वतंत्र चर है– मानव व्यवहार का अध्ययन करने के लिये। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान में बहुत सारा कार्य विभिन्न प्रकार के लोगों के उच्च और निम्न व्यक्तित्व स्तर के अध्ययन के लिये किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण शोध प्रबन्ध का एक अध्याय जोड़ने तथा ग्रन्थ सूची तैयार करने के लिए ही आवश्यक ही नहीं अपितु अनुसंधान के सभी स्तरों पर यह सहायक होता है, जैसे–समस्या का चुनाव, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन का सीमांकन, अध्ययन का प्रारूप तैयार करने, न्यादर्श का चुनाव आँकड़ों के समूह आदि में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जर्गर, ए0 एच0 (1980) , ने बर्हिमुखी, मनस्तापी और उपलब्धि का वृद्धि, सृजनात्मक व शैक्षिक के बीच सम्बन्ध ज्ञात करना पर शोध कार्य किया। अध्ययन के लिए बी0एड0 के छात्रों का न्यायदर्श किया गया, मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार प्राप्त हुआ–

1 मध्य श्रेणी का मनस्ताप का विषय पर कोई सम्बन्ध नहीं है जबकि उच्च श्रेणी का मनस्ताप का प्रभाव काई टेस्ट पर पड़ता है।
2 सृजनात्मकता में कम या उच्च मनस्तापी समूह का कोई सार्थक अन्तर नही है।
3 बर्हिमुखता का स्तर (उच्च या निम्न) का बुद्धि के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था।
4 बर्हिमुखता स्तर व शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं था।
5 उच्च शैक्षिक उपलब्धि के लोग उच्च श्रेणी का सृजनात्मकता रखते है, जबकि कम शैक्षिक उपलब्धि के लोग उच्च श्रेणी की अशाब्दिक सृजनात्मकता रखते है।
6 उच्च आवश्यकता के लोग निम्न आवश्यकता के लोगों की अपेक्षा अधिक शैक्षिक उपलब्धि रखते है।

सिंह (1978) ने सृजनात्मकता तथा असृजनात्मकता छात्राध्यापकों के मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध कार्य पूरा किया। उन्होंने अपने शोध अध्ययन में उच्च तथा निम्न सृजनशील छात्राध्यापकों का उनके मूल्य, व्यक्तित्व, समायोजन, अध्यापक अभिवृत्ति, पारिवारिक पृष्ठभूमि, उम्र, लिंग, शहरी/ग्रामीण, वैवाहिक स्थिति, धर्म तथा जाति के **बिन्दु पर तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध में निष्कर्ष निम्न है–**

1. सृजनात्मकता छात्राध्यापकों का समूह आर्थिक मूल्य तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में असृजनात्मकता समूह की अपेक्षा उच्च स्तर पर होते है
2. छात्राध्यापकों के सृजनात्मकता का गुण तथा उनकी उम्र, लिंग, वैवाहिक स्थिति, जाति तथा धर्म के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
3. सृजनशील समूह, असृजनशील समूह की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा सामाजिक मानक के सन्दर्भ में श्रेष्ठ होते है।
4. सैद्धान्तिक मूल्य के सन्दर्भ में सृजनात्मकता समूह, असृजनात्मकता समूह में अपेक्षाकृत निम्न स्तर पर होते है।

रैना (1986) ने अपना पी0एच–डी0 शोधकार्य ''पूर्व सेवा तथा सेवाकालीन अध्यापकों के व्यक्तित्व गुणों, मिश्रण अभिव्यक्ति तथा उनके सृजनशील गुणों का तत्त्व विश्लेषण विनय पर पूरा किया।
डॉ0 रैना ने अपने शोध विषय के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया था–

1. पूर्व सेवा तथा सेवाकालीन शिक्षकों के व्यक्तित्व गुणों, शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति तथा उनकी सृजनात्मकता क्षमता का पता लगाना।
2. विज्ञान, कला तथा वाणिज्य वर्ग के छात्राध्यापकों के बीच उनके व्यक्तित्व, गुणों, शिक्षण अभिव्यक्ति तथा उनकी सृजनशील क्षमता के सन्दर्भ में अन्तर मालूम करना।
3. विज्ञान, कला तथा वाणिज्य वर्ग के सेवाकालीन शिक्षकों के मध्य उनके व्यक्तित्व गुणों, शिक्षण अभिवृत्ति तथा उनकी सृजनशील क्षमता के सन्दर्भ में अन्तर मालूम करना।

शोध के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित ज्ञात किये गये–

(1) सेवाकालीन शिक्षण व्यक्तित्व के घटक– भ (लज्जालू कम साहसी), ब (भावात्मक दृष्टि से अपेक्षाकृत कम स्थायी बनाम अधिक स्थायी), म (विनम्र बनाम उग्र), । (गम्भीर बनाम निश्चित) पर अपेक्षाकृत अन्य शिक्षकों से श्रेष्ठ होते है, जबकि ये शिक्षक व्यक्तित्व के घटक, ठ (कम बुद्धिमान बनाम अधिक बुद्धिमान), र (विश्वसनीय बनाम शंकालु), म (दृढ बनाम कोमल), फ3 (समूह आश्रित बनाम आत्मनिर्भर) तथा ट (शान्त बनाम शंक्ति) पर अन्य शिक्षकों की अपेक्षा नीचे होते हैं।

2. सेवाकालीन शिक्षक सृजनात्मकता क्षमता परीक्षण द्वारा मापित घटक– बौद्धिकता, पर्यावरणीय संवेदनशीलता, व्यैक्तिकता, स्वीयक्रम तथा कलात्मक क्षमता पर पूर्व सेवाकालीन शिक्षकों की तुलना में श्रेष्ठ होते है अर्थात् पूर्व शिक्षक (छात्राध्यापक), बौद्धिकता, पर्यावरणीय, संवेदनशीलता, व्यैक्तिता, स्वीयक्रम तथा कलात्मक क्षमता में निम्न स्तर पर होते है।

प्रसाद बीना (1999) ने कानपुर के हाईस्कूल छात्रों की आदतों तथा अभिवृत्तियों से सम्बन्धित सृजनात्मकता का अध्ययन किया। मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार है–

1. उच्च सृजनात्मकता वाले छात्रों का प्रवाह निम्न सृजनात्मकता छात्रों से अधिक है।
2. उच्च मौलिकता वाले छात्र निम्न मौलिकता वाले छात्रों की तुलना में अधिक सृजनशील थे।
3. उच्च अध्ययन आदत, अभिवृत्ति तथा उच्च संलग्नता वाले छात्रों में लचीलापन निम्न आदत, अभिवृत्ति व संलग्नता वाले छात्रों की तुलना में अधिक था।

जायसवाल, विजय (2007) ने कानपुर शहर के विभिन्न शैक्षिक परिषदों द्वारा संचालित विद्यालयों के दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के वैज्ञानिक सृजनात्मकता तथा उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता तथा उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना था। अध्ययनकर्त्ता ने निष्कर्ष में पाया कि दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी वैज्ञानिक सृजनात्मकता पर विभिन्न शैक्षिक बोर्डों से सम्बद्ध रहते हुए प्रभाव पड़ता है। उच्च अभिप्रेरणा स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक सृजनात्मकता निम्न अभिप्रेरणा स्तर के विद्यार्थियों में अधिक पाई गई।

थॉसन और प्रीकिंग (2007), ने मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण बठती आयु में समस्याओं का अध्ययन किया और पाया कि क्रोध करने वाले छात्रों में नकारात्मक अभिवृत्ति का विकास होता है।

• **रिग्वी ओर ली0 (2007),** ने किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर अभिभावकों द्वारा पहुँचाये पीड़ा तथा साथियों द्वारा प्रताड़ना का मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन में 1432 छात्रों का चयन किया

निष्कर्ष रूप में पाया कि अभिभावकों, दोषपूर्ण अनुशासन और मित्रों द्वारा प्रताड़ना का छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

बर्जेसनिवस्की (2007), ने तनाव का अध्ययन किया साथ ही संवेगात्मक अनुक्रिया का विश्लेषण तथा कोपिंग के तरीके पर कार्य किया इस शोध में पाया गया कि संवेगात्मक अनुक्रिया द्वारा तनाव को अनुगामी दिशा में चरमावस्था पर पहुँचाया जा सकता है।

चंदेल, श्वेता (2009), ने स्नातक स्तर के विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्रों में दुश्चिंता और अनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन किया और जनसंख्या के रूप में मेरठ विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं को चुना और यादृच्छिक चयन से 200 छात्रों का चयन किया और ए0के0पी0 सिन्हा और एल0एन0के0 सिन्हा द्वारा बनाये गये उपकरण का प्रयोग किया। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि विज्ञान और कला वर्ग में दुश्चिंता के कारण अनुशासन पर प्रभाव पड़ता है।

शुक्ला, अनामिका (2011), ने जूनियर हाईस्कूल के विद्यालयों के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया और जनसंख्या के रूप में मेरठ में स्थित जूनियर हाईस्कूल के छात्रों का प्रतिचयन विधि से 100 छात्र एवं छात्राओं को चयनित किया और अरूण कुमार सिंह और डा0 अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित एम.एच.बी. और होम इन्वयरमेन्ट इन्वेन्टरी डा0 करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित एच.ई.आई. का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि जूनियर हाईस्कूल के छात्र/छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य तथा पारिवारिक वातावरण एक समान न होकर अलग–अलग होता है, परन्तु छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई तुलनात्मक अन्तर नही होता है और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

समस्या कथन–

"शिक्षक प्रशिक्षण की सृजनात्मकता, दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की कार्यकारिणी परिभाषा–

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान–

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान से तात्पर्य बी0एड0, बी0टी0सी0 तथा उन संस्थाओं से है जहाँ एन0सी0टी0ई0 द्वारा मान्यता प्राप्त एक वर्षीय या द्विवर्षीय कार्यक्रम का संचालन हो रहा है तथा उन्हें स्थायी सम्बद्धता प्राप्त हो।

2. सृजनात्मकता–

सृजनात्मकता एक ऐसी योग्यता है जो किसी समस्या का विद्वतापूर्ण समाधान करने के लिए नवीनतम विधियों एवं स्थितियों का सहारा लेती है।

क्रो एवं क्रो के अनुसार , ''सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।''
ड्रेवहल के शब्दों में , ''सृजनात्मकता वह मानवीय योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।''
सृजनात्मकता के मुख्य चार घटक है–
(1) प्रवाह– प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गई समस्या पर अधिकाधिक प्रत्युत्तरों से है।
(2) विविधता– विविधता से अभिप्राय किसी समस्या पर दिये गये विकल्पों में विविधता से होने से है।
(3) मौलिकता– मौलिकता से अभिप्राय व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किये विकल्पों या उत्तरों का असामान्य होने से हैं
(4) विस्तारण– विस्तारण से तात्पर्य दिये गये विचारों या भावों की विस्तृत व्याख्या की पूर्ति या प्रस्तुतीकरण से होता है।

दुश्चिंता–
दुश्चिंता एक मनोवैज्ञानिक और दैहिक (दार्शनिक) अवस्था है जिसमें संज्ञानात्मक, भावात्मक, व्यवहारात्मक घटक के लक्षण होते है।
दुश्चिंता की उत्पत्ति डर से होता है जब डर चिरकालिक हो जाता है तो इससे व्यक्ति में दुश्चिंता की उत्पत्ति होती है। दुश्चिंता में मानसिक स्थिति अस्पष्ट होती है लेकिन यह संचयी होता है ओर प्रत्येक क्षण यह एक खास समय तक बढ़ते ही जाता है।

पुरुष एवं महिला प्रशिक्षु–
शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में बी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं से है।

व्यक्तित्व
व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग साधारण बातचीत के दौरान बहुतायत से किया जाता हैं। साधारण बातचीत में प्रयुक्त 'व्यक्तित्व' शब्द किसी ऐसे गुण या विशेषता को इंगित करता हैं। गिलफोर्ड के अनुसार ''व्यक्तित्व गुणों को समन्वित रूप हैं।'' इस प्रकार आलपोर्ट महोदय ने व्यक्तित्व को 50 परिभाषाओं का विश्लेषण व वर्गीकरण किया हैं।

अध्ययन के उद्देश्य–
किसी भी कार्य को करने का एक निश्चित उद्देश्य होता है। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–
1. एकसूत्रता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सुसम्बद्धता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।मौलिकता के

आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
1. संभ्रान्तियों के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
3. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
4. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
5. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
6. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
7. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना–
लघुशोध प्रबन्ध को एक वैज्ञानिक रूप देने तथा समस्या के हल के लिए इस शोध प्रबन्ध को निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गयी है।
1. एकसूत्रता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।
2. सुसम्बद्धता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।
3. मौलिकता के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।
4. संभ्रान्तियों के आधार पर महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।

5. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।
6. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।
7. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त पुरुष प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।
8. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।
9. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के उच्च दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।
10. शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर के मध्यम दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं एवं निम्न दुश्चिंता युक्त महिला प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

अध्ययन की सीमांकन–

प्रस्तुत लघु शोध में मेरठ जनपद में स्थित बी0एड0 प्रशिक्षार्थियों को जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

1. इस शोध के अन्तर्गत चार शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं को लिया गया है जो निम्न है–
   (1) मेरठ कॉलेज, मेरठ।
   (2) एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ।
   (3) डी.एन. कॉलेज, मेरठ।
   (4) आर.जी.पी.जी. कॉलेज, मेरठ।
2. इन महाविद्यालयों की महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं की सृजनात्मकता एवं दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए 200 महिला तथा 200 पुरुष प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है।

शोध प्रारूप–

प्रस्तुत अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य **"शिक्षक प्रशिक्षण की सृजनात्मकता, दुश्चिंता अभिवृत्ति का व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"** करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नलिखित कार्य योजना का निर्माण किया गया–

1. अध्ययन विधि
2. जनसंख्या
3. न्यादर्श
4. उपकरण
5. प्रदत्तों का संकलन
6. सांख्यिकीय विधियाँ

अध्ययन विधि–

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्त्ता ने सर्वेक्षण विधि को अपनाया है। **सर्वेक्षण विधि** से निकले हुए निष्कर्षों का सामान्यीकरण किया जा सकता है। सर्वेक्षण विधि से किसी भी क्षेत्र की तात्कालिक परिस्थिति की सही जानकारी हो जाती है जिसमें उस क्षेत्र में तात्कालिन परिस्थिति की सही जानकारी हो जाती है। जिसमें उस क्षे में शीघ्र सुधार किया जा सकता है। सर्वेक्षण विधि को शैक्षिक समस्याओं के समाधान में सर्वाधिक रूप से प्रयुक्त की जाने वाली विधि के रूप में स्वीकार किया जाता है। सर्वेक्षण विधि श्रम, धन व समय की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा मेरठ जनपद में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण (बी0एड0) महाविद्यालयों को शोध की जनसंख्या माना जायेगा।

अध्ययन का न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अनुसंधानकर्त्ता ने मेरठ जिले के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है तथा इनमें से 200 पुरुष प्रशिक्षु तथा 200 महिला प्रशिक्षु का चयन किया जायेगा।

क्र0	महाविद्यालय का नाम	प्रशिक्षु	योग
1.	मेरठ कॉलेज, मेरठ।	पुरुष (50)	100
		महिला (50)	
2.	एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ।	पुरुष (50)	100
		महिला (50)	
3.	डी.एन. कॉलेज, मेरठ।	पुरुष (50)	100
		महिला (50)	
4.	आर.जी.पी.जी. कॉलेज, मेरठ।	पुरुष (50)	100
		महिला (50)	
		योग	**400**

उपकरण–

सृजनात्मकता मापनी–

प्रस्तुत शोध में सृजनात्मकता के मापन के लिए डा0 एस0पी0 मल्होत्रा (कुरुक्षेत्र, विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) एवं डॉ0 सुचेता कुमारी (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

दुश्चिंता मापनी–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में दुश्चिंता के मापन के लिए ए0के0पी0 सिन्हा और एल0एन0के0 सिन्हा (पटना) द्वारा बनाये गये सिन्हा व्यापक विस्तृत दुश्चिंता परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में व्यक्तित्व के मापन के लिए स्वनिर्मित ''व्यक्तित्व प्रश्नावली'' पुस्तिका का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ–

प्रस्तावित शोध में आँकड़ों के विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या हेतु टी–टेस्ट सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **अस्थाना, विपिन एवं अन्य (2008),** शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यकीय, आगराः ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, पृष्ठ, पृष्ठ संख्या–542
2. **गुप्ता, एस0पी0 (2008),** आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, मेरठः शारदा पुस्तक भवन, पृष्ठ संख्या–313
3. **गुप्ता, एस0पी0 (2008),** व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यकीय विधियाँ, मेरठः शारदा पुस्तक भवन, पृष्ठ संख्या–413
4. **राय, पारसनाथ (2008),** अनुसंधान परिचय, आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पृष्ठ संख्या–201
5. **सारस्वत, मालती (2004),** शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, मेरठ आलोक प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–643
6. **सिंह, अरूण कुमार (2008),** उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास, पृष्ठ संख्या–813
7. **शर्मा, आर0ए0 (2007),** शिक्षा में अनुसंधान मेरठः आर0लाल बुक डिपो।
8. **अब्राहम, एम0 (1985),** ए स्टडी आफ सरटेन साइको–सोसल कोरिलेटेड ऑफ मेण्टल स्टेट्स ऑफ यूनिवर्सिटी इण्टरानिस ऑफ, केरलाः पी–एच0डी0, केरला यूनिवर्सिटी, एम0बी0 बुच, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन।
9. **असवाल, सीमा (2002),** लाइफ स्टाइल स्ट्रेस एण्ड कोपिंग विहैवियर ऑफ वर्किंग बुमेन, पी–एच0डी0 (साइको), कानपुरः सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय।
10. **कपिल, एच0के0 (1995),** अनुसंधान विधियाँ, मेरठः भार्गव भवन।
11. **कोली, लक्ष्मी नारायण (2003),** रिसर्च मेचडोला, आगराः वाई0के0 पब्लिशर्स।
12. **गुप्ता, एस0पी0 और गुप्ता, अलका (2004),** शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठः शारदा पुस्तक भवन।
13. **गुप्ता, एस0पी0 और गुप्ता, अलका (2010),** आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, मेरठः शारदा पुस्तक भवन।
14. **गुप्ता, एस0पी0 और गुप्ता, अलका (2003),** उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठः शारदा पुस्तक भवन।
15. **गुप्ता, एस0पी0 और गुप्ता, अलका (2008),** सांख्यिकी विधिया, मेरठः शारदा पुस्तक भवन।
16. **चंदेल, श्वेता (2009),** स्नातक स्तर के विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्रों में दुश्चिंता और अनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध, मेरठः नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।
17. **चन्द्रा, अनीता एण्ड मिनकोविट्ज, सी0एस0 (2007),** फैक्टर दैट इन्फ्यूऐन्स मेन्टल हेल्थ स्टिगमा एमांग ऐर्थ ग्रड एडोलसेन्ट, जर्नल ऑफ यूथ एण्ड एडोलेसेन्ट, वाल्यूम–36, पृष्ठ संख्या 763–774।
18. **जायसवाल, एन0एम0 (2003),** द इफेक्ट ऑफ एकेडमिक स्ट्रेस आन कोगनिटिव एण्ड नान कागनिटिव कैरेक्टरिस्टिक ऑफ स्कूल स्टूडेन्ट एजूकेशन, पी–एच0डी0 राजकोटः सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी।
19. **पाण्डेय, रामशकल (2003),** शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठः आर लाल बुक डिपो।
20. **पाठक, पी0डी0 एवं त्यागी, जी0ए0डी0 (2000),** शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
21. **पाण्डेय, के0पी0 (2011),** शैक्षिक अनुसंधान, वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन।
22. **रिग्वी, के एण्ड ली, पी0टी0 (2007),** इम्पलीकेशन ऑफ इन्डेक्वेट पैरेन्टल वाइन्डिग एण्ड पी0पी0 विक्टी माइजेशन फार एडोलसेन्ट ऑफ मेन्टल हेल्थ, जर्नल एडोलसेन्ट, वाल्यूम–30, पृष्ठ सं0 801–812।
23. **लारेन्स एण्ड कुमार (2007),** रिलेशनशिप बिटवीन एन्जाइटी एण्ड ऐकेडमिक एचीवमेन्ट ऑफ बी0एस–सी0 मैथमेटिक्स स्टूडेन्ट रिसर्च ऑफ एजूकेशन, वाल्यूम–05, पेज सं0 360।